Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date: 21-9-20
Do Next class

Psychosexual Development Stages.

(3) लिंग प्रधानावस्था या शिश्नावस्था (Phallic Stage) :- मनोलैंगिक विकास की तीसरी अवस्था शिश्नावस्था (Phallic Stage) है जो चौथे से पाँचवें साल के दौरान उत्पन्न होती है। इस अवस्था में एक नया कामुकता क्षेत्र (erogeneous zone) का विकास होता है। यह नया कामुकता क्षेत्र जनेन्द्रिय (genital) होता है। लड़कियों के जनेन्द्रिय को योनि (vagina) तथा लड़कों के जनेन्द्रिय को शिश्न (penis) कहा जाता है। फ्रायड का कहना था कि इस अवस्था में बच्चे अपने जनेन्द्रिय को छूता है, मलता है, तथा खींचता है। इससे जनेन्द्रियों में संवेदन उत्पन्न होता है और उसे लैंगिक आनन्द (Sexual Pleasure) की प्राप्ति होती है। इस अवस्था में जनेन्द्रियों से मिलनेवाले लैंगिक सुख की प्रधानता होती है।

इस अवस्था में बच्चे चूंकि लिंग-भेद (sex-difference) से भली-भाँति परिचित हो जाते हैं परन्तु जनेन्द्रिय (genital) के लैंगिक कार्य के बारे में उन्हें कोई ज्ञान नहीं होता है, इसलिए इसके बारे में वे अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा रखता है। इस अवस्था के बच्चों में प्रदर्शन-प्रवृति (Exhibitionistic tendency) की प्रधानता होती है। फलस्वरूप वे माँ-बहन, माता-पिता को नंगा देखने का अवसर ढूंढता रहता है। फ्रायड के अनुसार माता पिता के बीच रतिक्रिया को देखकर

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

बच्चे समझते हैं कि उनके माता पिता के प्रति एक आक्रामक व्यवहार (aggressive behaviour) कर रहे हैं, फ्रायड का कहना है कि इस अवस्था में लड़का में मातृ-मनोग्रन्थि (oedipus complex) का विकास तथा लड़कियों में पितृ-मनोग्रन्थि (electra complex) का विकास होता है। फ्रायड के अनुसार, मातृ मनोग्रन्थि प्रत्येक लड़का में तथा पितृ मनोग्रन्थि प्रत्येक लड़की में विकसित होता है। इसका मतलब यह हुआ की ये दोनों मनोग्रन्थियाँ (complexes) सार्वभौमिक (universal) होती है। मातृ मनोग्रन्थि (oedipus complex) में प्रत्येक लड़का अचेतन होता है रूप से (unconsciously) अपने माता ~~पिता~~ से लैंगिक प्रेम तथा रति क्रिया (sexual intercourse) की इच्छा करता है तथा पिता से घृणा करता है। वह पिता को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझने लगता है तथा उन्हे माँ के साथ लैंगिक सुख संतुष्टि (sexual satisfaction) के मार्ग में प्रमुख बाधक बनने लगता है। लेकिन वह यह भी समझता है कि माँ के साथ उसका लैंगिक प्रेम (sex-love) ~~उस~~ कतई पसंद नहीं है और एक दिन गुस्सा कर उसका शिश्न काटने की धमकी दे देता है। इससे लड़का में पहले से उत्पन्न शिश्न कट दिए जाने की चिन्ता और भी प्रबल हो जाती है। इसे फ्रायड ने 'बधिया होने की चिन्ता' (castration anxiety) कहा है।

लड़कियों में इस अवस्था में पितृ-मनोग्रन्थि (electra complex) का विकास होता है। यह एक ऐसी मनोग्रन्थि है जिसमें लड़की पिता से लैंगिक सुख (sexual pleasure) प्राप्त करना चाहती है तथा अपने माता से घृणा करती है। माँ को वह अपना प्रतिद्वंद्वी समझती है। लड़कियों में लड़का की अपेक्षा यह स्तर जटिल होता है। इस अवस्था में लड़कियों में शिश्न ईर्ष्या (penis envy) भी उत्पन्न हो जाता है जो लड़का में बधिया होने की

हीनि की चिन्ता (castration anxiety) का एक प्रतिरूप (counterpart) है। शिश्न ईर्ष्या में लड़की में इस बात की ईर्ष्या हो जाती है. उसके पास अपने भाईयों एवं पिता के समान शिश्न (Penis) नहीं है उसका अपना यह विश्वास होता है कि उसके पास भी पहले ऐसा ही शिश्न था परन्तु सजा के रूप में उसकी माँ उससे उसकी शिश्न ही छीन ली है। इससे स्वभावत: वह माँ के प्रति अधिक विद्वेषी (hostile) हो जाती है। शिश्न ईर्ष्या (Penis envy) से लड़कियों मे हीनता की भाव (Feeling of inferiority) भी उत्पन्न होता है क्योंकि लड़की अपने आप में भाइयों एवं पिता से तुलना करने पर शिश्न जैसे अंग की कमी पाती है।

फ्रायड का कहना था की लड़का जब मातृ-मनोग्रन्थि (oedipus complex) का सफलतापूर्वक समाधान तथा लड़की में पितृ-मनोग्रन्थि (oedipus complex) का सफलतापूर्वक समाधान हो जाता है तो इससे इनमें नैतिकता (morality) का विकास होता है। प्राय: इन मनोग्रन्थियों का समाधान दमन (Repression) द्वारा अपने माता पिता के साथ आत्मीकरण (identification) करके किया जाता है। इसका परिणाम यह होता की लड़कों तथा लड़कियों में पराहं (super ego) का विकास प्रारंभ हो जाता है।

जब इन दोनों मनोग्रन्थियों (complexes) का ठीक ढंग से समाधान नहीं हो पाता है तो इसका परिणाम उसके वयस्क व्यक्तित्व (adult personality) पर सीधा पड़ता है। फ्रायड के अनुसार जो लड़का शैशनावस्था (phallic stage) पर आबद्ध (Fixated) होता है, उनमे वयस्क होने पर व्यक्तित्व के अन्य शीलगुणों में उतावलापन, शेखीबाजी (

PTO

(4)

(boastfullness), उच्चाकांक्षा (high ambition) आदि शीलगुण की प्रधानता होती है। जो लड़की शिश्नावस्था पर आबद्ध (Fixated) होती है उनमें वयस्क होने पर व्यक्तित्व के अन्य शीलगुणों में इश्कबाजी (Flirtatiousness), सम्मोहकता (Seductiveness) तथा स्वच्छन्द संभोगिता (promiscuity) आदि शीलगुणों की प्रधानता होती है। फ्रायड के अनुसार वयस्कता (adulthood) में पुरुषों में होनेवाले नपुंसकता (Impotency) तथा स्त्रियों के ठंडापन (Frigidity) का एक मनोवैज्ञानिक कारण शिश्नावस्था (Phallic stage) के इन मनोग्रन्थियों (complexes) का ठीक ढंग से समाधान नहीं होना होता है।

Next-class